डॉ०शैलेंद्र मोहन मिश्र
सी०एम०जे०कॉलेज
दोनवारी हाट, खुटौना

नेपालक मैथिली नाटक (भाग - 2)

सुमति जितामित्र मल्लक बाद हुनक उत्तराधिकारी सुयोग्य पुत्र भूपतींद्र मल्ल अपन राज्य कालमे मैथिली साहित्यक विकास हेतु ओही परम्परा मे निम्नलिखित मैथिली नाटकक रचना कएल तथा मैथिल विद्वान सँ रचना करबाओल ।

1. भाषा नाटक :

ई नाटक भूपातींद्र मल्लक नाम सँ रचित अछि । तें तीन अंकक ई नाटक पद्यमय अछि । एकर कथानक अत्यंत छोट अछि । रुग्ण पुत्रक उत्पत्ति सँ राजा बज्रवाहु आ रानी पद्मावती बहुत चिंतित रहैत छलीह । एक दिन हुनक पुत्र हेमरथक मृत्यु भए जाइत छनि । पुत्रक मृत्युक उपरांत राजा रानी अत्यन्त विह्वल भए जाइत छथि । ततपश्चात एक योगीक आगमन होइत अछि जे अपन मंत्र बल सँ हेमरथ केँ पुनः जीवन प्रदान करैत छथि । योगी बनक हेतु प्रस्थान करैत छथि। पिता पुत्र मे युद्ध तथा अंतमे राजाक द्वारा हेमरथक राज्याभिषेक आदिक रोचक लए एहि नाटकक समस्त रचना पद्यमे कएल गेल अछि ।

2. गौरी विवाह नाटक :

ई नाटक सैट अंकक अछि । सतीक देह त्याग , महादेवक वियोग , गौरीक जन्म , गौरी महादेवक तपस्या , हर गौरीक विवाह , गौरीक पुत्र द्वारा ताड़कासुरक वध आदि एहि नाटकक विषय अछि। एहि नाटक मे कथानक संयोजन पर विशेष ध्यान देल गेल अछि । गौरी शंकरक विवाह मिथिलाक रीति - नीतिक अनुकूल चित्रित अछि ।

3. माधवानल नाटक :

ई नाटक द्विजवर कृष्णदेव द्वारा भूपातींद्र मल्लक नामे लिखल गेल अछि । माधवानल नामक कलाविद उचितवक्ता होएबाक कारणेँ राजा कामसेनक ओहि ठाम सँ निर्वासित होइत छथि । ओ कामसेनक दरबारक नर्तकी कामकन्दला सँ प्रेम करए लगैत छथि । माधवानल उज्जैयिनी नगरी पहुँचैत छथि जतए राजा कामकन्दला ओ माधवानलक प्रेमक परीक्षा लए कामसेन केँ युद्ध मे परास्त कए माधवानल ओ कामकन्दलाक मिलन करबैत छथि । तीन अंकक नाटक अछि । एहि मे गद्यक प्रचुर प्रयोग भेल अछि ।

4. रुक्मिणीहरण नाटक :

इहो नाटक भूपातींद्र मल्लक भनिता सँ रचित अछि तथा गीतमे वंशीधर कविक नामोल्लेख अछि । श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणीक हरणक प्रसिद्ध कथा एकरो आधार अछि । एहूमे तीन अंक अछि । कथोपकथन गद्य ओ पद्य दुनू मे अछि ।

5. उषाहरण नाटक :

भूपातींद्र मल्लक भनिता सँ ई नाटक लिखल गेल अछि । गीतमे गणेश कविक चर्चा अछि । एहि नाटकक कथानक मे कोनहुँ नवीनता नहि अछि । सात अंकक एहि नाटक मे गद्य पद्य दुनूक सुंदर प्रयोग भेल अछि ।

6. कंसवध नाटक :

एहि नाटकक रचना काल अठारहम शताब्दीक आदि भाग मानल जाइत अछि। भूपातींद्र मल्लक नामे लिखल गेल ई कवि गणेशक रचना थिक जे राजवर्णनाक गीत सँ ज्ञात होइत अछि । एहि नाटक मध्य गीतक

प्रचुर प्रयोग भेल अछि किन्तु बीच - बीच क दोहामे हिन्दीक प्रयोग सेहो भेल अछि । वित्त सभ विशुद्ध मैथिली मे अछि ।

7. गोपीचंद्रोपाख्यान नाटक :

एहि नाटकक कथावस्तु पाँच गोट अंकमे रचित अछि । राजा गोपीचंद्रक कथा एहि नाटकमे वर्णित अछि । ई नाटक चारि गोट भाषा मैथिली , बंगला , नेवारी तथा संस्कृत भाषाक संयोग सँ रचल गेल अछि । एकर रचना काल अठारहम शताब्दीक आदि भाग मानल गेल अछि ।

एहि नाटकक अतिरिक्त राजा भूपातींद्र मल्लक नामे विरचित निम्नलिखित आओरो मैथिली नाटक भेटैत अछि -

8. शम्बरासुर वधोपाख्यान नाटक ।
9. जालंधरोपाख्यान नाटक ।
10. जैमिनी भारत नाटक ।
11. मुदावती हरण नाटक ।
12. विक्रम चरित नाटक ।
13. श्रीखंड चरित नाटक ।
14. पद्मावती नाटक ।
15 . पशुपति नाटक ।
16. महाभारत नाटक ।
17. रत्नेश्वर प्रादुर्भावोपाख्यान नाटक ।

भक्तपुर राजधानीक अंतिम मल्ल राजा भेलाह रणजीत मल्ल जे अपन शासन कालमे मैथिली साहित्यक पूर्ण विकास कएलनि । संगीतशास्त्र ओ गान्धर्व विद्या मे हिनक नीक प्रवेश छलनि । हिनक शासनकाल मे भक्तपुर मे लिखल गेल निम्नलिखित मैथिली नाटक उपलब्ध होइत अछि ।

1. उषाहरण नाटक :

रणजीत मल्लक भनिता सँ अनेको नाटक लिखल गेल अछि जाहि मे उषाहरण एक अछि । ई नाटक रणजीत मल्लक नामे काशीनाथक रचना थिक। एहि मे आठ अंक अछि । एकर कथावस्तु भूपातींद्र मल्लक उषाहरणक कथावस्तु सँ किछु भिन्न प्रकारक अछि । वीररस प्रधान एहि नाटकमे उषा ओ अनिरुद्धक मिलनक वर्णनमे श्रृंगाररस अछि ।

2. मंधात्र्युपाख्यान नाटक :

पाँच अंकक एहि नाटकक रचना द्विज काशीनाथक द्वारा भेल अछि । उषाहरण नाटक सँ एकर कथानक सादृश्य रखैत अछि ।

3. कोलासुर वधोपाख्यान नाटक :

एहि नाटकक रचयिता द्विज काशीनाथ छथि । एहिमे मैथिली भाषाक प्रचुर प्रयोग भेल अछि ।

4. अंधकासुर वधोपाख्यान :

एहि नाटकमे अंधकासुर वधक कथा वर्णित अछि । एहिमे ठाम - ठाम संस्कृत मे श्लोक अछि तथा सर्वत्र मैथिली गद्यक प्रचुर प्रयोग भेल अछि ।

5. खट्वासुर वधोपाख्यान :

एहि नाटकमे खट्वासुर वधक कथा वर्णित अछि । एहिमे मैथिली गद्य पद्यक प्रचुर प्रयोग भेटैत अछि ।

6. वाल्मीकि रामायण नाटक :

ई नाटक विशाल आकारक अछि । एहिमे 43 गोट अंक अछि । एकर रचनाविधान गोपीचंद्रोपाख्यान नाटक सदृश अछि ।

7. इंद्र विजय नाटक :

उषाहरण नाटकेक परिपाटी पर 15 अंकमे एहू नाटकक रचना भेल अछि । राजा चित्रकेतु ओ रानी कृतदुतिक पौराणिक कथानक एकर कथावस्तु अछि ।

एकर अतिरिक्त रणजीत मल्लक भनिता सँ लिखल गेल नाटक अछि -

8. रुक्मिणीहरण नाटक ।
9. कृष्ण चरित नाटक ।
10. रामायण नाटक ।
11. कृष्ण कैलास यात्रोपाख्यान नाटक ।
12. मदनचरित नाटक ।
13. माधवानल कामकन्दला नाटक।
14. नलचरित नाटक ।
15. त्रिपुरासुर वधोपाख्यान नाटक ।
16. पृथुपाख्यान नाटक ।
17. रुक्मिणी परिणय नाटक ।
18. रामचरित नाटक ।
19. चंद्रांगदोपाख्यान नाटक ।
20. दिकपाल गणेशोपाख्यान नाटक ।
21. ययात्युपाख्यान नाटक ।
22. सुब्रह्मण्योपाख्यान नाटक ।
23.हरगण कथा नाटक ।
24.षड्दर्शन कथा नाटक ।
25. वीर वीरिणी नाटक ।

ख. एहि मध्ययुगमे मैथिली साहित्यक विकासक दोसर केंद्र छल ललितपुर पाटन जतए अनेक मैथिली नाटक ओ मैथिली गीतक रचना भेल । राजा सिद्धिनर सिंहमल्लक समय मे मैथिली गीतक अतिरिक्त एक नाटक प्राप्त होइत अछि ।

हरिश्चंद्र नृत्यम :

एहि नाटकक रचना पाटन केर राजा सिद्धि नरसिंह मल्लक समय मे भेल अछि । एहि नाटकमे राजा हरिश्चंद्र ओ रोहिताश्वक प्रसिद्ध कथानक लए एकर कथावस्तु अछि । एकर भाषा बंगला मिश्रित अछि तथा संस्कृत श्लोकक प्रयोग सेहो भेल अछि ।

योगनरेन्द्र मल्लक नामे ' महाभारत ' नाटकक रचना कवि हरिवंश द्वारा भेल अछि जे राजवर्णनाक गीत सँ ज्ञात होइत अछि । श्री निवास मल्लक नाम सँ 'ललितकुवलयाश्व ' नाटकक रचना भेल अछि । विष्णु सिंह मल्लक नाम सँ ' उषाहरण आ ' कृष्ण चरित ' नाटक प्राप्त होइत अछि ।

ग. एहि मध्ययुगमे साहित्य ओ शासनक तेसर केंद्र छल कान्तिपुर (काठमांडू) । एहिठामक प्रतापमल्ल केवल एक प्रतापी शासके नहि छलाह ओ स्वयं अनेक शास्त्र ओ भाषाक गंभीर ज्ञान रखैत छलाह । हिनका जहिना संस्कृत भाषा पर पूर्ण अधिकार ओ पद्य रचना करबाक अपूर्व क्षमता छलनि तहिना छलनि मैथिली भाषामे सुललित गद्य

पद्य रचना करबाक निपुणता । हिनके समय मे काठमांडू मे ' गीतदिगम्बर ' नाटकक रचना वंशमणि झा कएने छलाह । हिनक दोसर नाटक अछि 'मुदित मदालसा ' ।

एकर अतिरिक्त भूपालेन्द्र मल्लक नामे ' नलचरित' नाटक । जगज्जयमल्लक नाम। ' विद्या विनोद ' नाटक तथा ' अभिनव प्रबोध चंद्रोदय ' नाटक । पार्थिवेंद्रमल्लक नामे ' पंचराक्ष ' नाटक प्राप्त होइत अछि ।

एहि नाटकक पश्चात किछु आओरो नाटक उपलब्ध होइत अछि जाहि मे प्रसिद्ध अछि -

1. निष्क नाटक ।
2. दिकपालोपाख्यान नाटक ।
3. भाषा संस्कृत नाटक ।
4. राज्याभिषेक नाटक ।
5. रामायण हनुमन्नाटकादि प्रकीर्ण ।
6. वीरध्वजो